पाठ 6: पुनर्गठन का काल

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1. मौर्योत्तर काल को पुनर्गठन का काल क्यों कहा जाता है?
उत्तर:

- मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद अनेक नए राज्यों का उदय हुआ।
- राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन हुए।
- व्यापार और उद्योग का विकास हुआ।
- नई कला, संस्कृति और धार्मिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।
- विभिन्न क्षेत्रों में नए शासक वंश स्थापित हुए।
- इसलिए इस काल को पुनर्गठन का काल कहा जाता है।

प्रश्न 2. संगम साहित्य पर 150 शब्दों में एक लेख लिखिए।
उत्तर: संगम साहित्य प्राचीन तमिल भाषा का महत्वपूर्ण साहित्य है। इसका विकास दक्षिण भारत में संगम काल के दौरान हुआ। यह साहित्य उस समय के समाज, संस्कृति, राजनीति, व्यापार और लोगों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

संगम साहित्य में कविताओं और गीतों का विशेष स्थान है। इसमें प्रेम, वीरता, युद्ध, प्रकृति और सामाजिक जीवन का सुंदर वर्णन मिलता है। इस साहित्य से हमें चेर, चोल और पांड्य राज्यों की जानकारी भी प्राप्त होती है।

संगम कवियों ने आम लोगों के जीवन, उनकी भावनाओं और दैनिक गतिविधियों को भी अपने साहित्य में स्थान दिया। यह साहित्य दक्षिण भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है।
आज भी संगम साहित्य भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

प्रश्न 3. इस अध्याय में उल्लिखित किन शासकों ने अपनी उपाधि में माता का नाम सम्मिलित किया? उन्होंने ऐसा क्यों किया?
उत्तर:

- सातवाहन वंश के कुछ शासकों ने अपनी उपाधि में माता का नाम सम्मिलित किया।
- उदाहरण: गौतमीपुत्र शातकर्णी और वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी।
- ऐसा अपनी माता के सम्मान और प्रतिष्ठा को दर्शाने के लिए किया जाता था।
- इससे शासक अपने परिवार और वंश की पहचान भी स्थापित करते थे।

प्रश्न 4. इस अध्याय में वर्णित किसी एक राज्य जो आपको रोचक लगता है, के विषय में 250 शब्दों का एक लेख लिखिए। आपने उस राज्य का चयन क्यों किया?

उत्तर:

कुषाण साम्राज्य

मुझे इस अध्याय में वर्णित कुषाण साम्राज्य सबसे अधिक रोचक लगता है। इसका प्रमुख शासक कनिष्क था, जो एक महान शासक माना जाता है। कुषाण साम्राज्य का विस्तार मध्य एशिया से लेकर उत्तर भारत तक था।

कनिष्क ने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया और उसके प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसके शासनकाल में व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बहुत बढ़ावा मिला। भारत, चीन और रोम के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत हुए।

कुषाण काल में कला और वास्तुकला का भी विकास हुआ। विशेष रूप से गांधार कला शैली इसी काल में प्रसिद्ध हुई। इस कला में भारतीय और यूनानी प्रभाव दिखाई देते हैं।

मैंने इस राज्य का चयन इसलिए किया क्योंकि इसने विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य किया। व्यापार, धर्म और कला के क्षेत्र में इसके योगदान ने भारतीय इतिहास को समृद्ध बनाया। कनिष्क की दूरदर्शिता और सांस्कृतिक सहिष्णुता इस राज्य को विशेष बनाती है।

प्रश्न 5. कल्पना कीजिए कि आपको एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप कौन-सा राजचिह्न चुनेंगे और क्यों? आप एक शासक के रूप में कौन-सी उपाधि धारण करेंगे? अपने राज्य के विषय में एक लेख लिखिए जिसमें राज्य के मूल्य, नियमावली एवं विशिष्टताएँ सम्मिलित हों।

उत्तर:

मेरा आदर्श राज्य

यदि मुझे एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का अवसर मिले तो मैं अशोक चक्र और पुस्तक को अपना राजचिह्न चुनूँगा। अशोक चक्र न्याय और प्रगति का प्रतीक है तथा पुस्तक ज्ञान और शिक्षा का प्रतीक है।

मैं अपने लिए "लोकहित सम्राट" की उपाधि चुनूँगा, जिसका अर्थ है जनता के हित में कार्य करने वाला शासक।

मेरे राज्य के मुख्य मूल्य होंगे—

1. समानता
2. न्याय
3. शिक्षा
4. पर्यावरण संरक्षण
5. शांति

मेरे राज्य में सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त होंगे। शिक्षा सभी के लिए निःशुल्क होगी। पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षारोपण को बढ़ावा दिया जाएगा। कानून सभी पर समान रूप से लागू होंगे।

मेरे राज्य की विशेषता होगी कि वहाँ विज्ञान, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का संतुलित विकास किया जाएगा। नागरिकों की भागीदारी से शासन चलाया जाएगा और सभी के कल्याण का ध्यान रखा जाएगा।

प्रश्न 6. आपने मौर्योत्तर काल के वास्तु कलात्मक विकास के विषय में पढ़ा है। भारतीय उपमहाद्वीप के एक रेखांकित मानचित्र पर इस अध्याय में उल्लिखित कुछ स्थापत्य कलाओं के स्थान को चिह्नित कीजिए।

उत्तर:

To get notes visit our website

mukutclasses.in